RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-02
Issue-11
November-2017

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com

नेपाल में राजनीतिक जागरण एवं संविधान व्यवस्था के प्रयास

डॉ. राजेश कुमार

ARTICLE DETAILS

Article History

Published Online: 30 November 2017

Keywords

संविधान, राजा ,राजमुकुट, साम्यवादी, राजतंत्र, राजनैतिक परिवर्तन, आधुनिकीकरण, संवैधानिक व्यवस्था

ABSTRACT

कुल मिलकर नेपाल में 1950 के बाद आधुनिकरण व राजनीतिक विकास की प्रक्रिया जटिल रही है 1950 में नेपाल में राजनीतिक परिवर्तन तो हो गया लेकिन 1950 से 1990 तक सीधे तौर पर राजा की सर्वोच्चता बनी रही। राजा ने अपने तरीके से एक सीमित रूप में ही राजनीतिक परिवर्तन की आज्ञा दी साथ ही जो अभिजन वर्ग चाहे वह नौकरशाही हो, सेना हो या शिक्षित विशिष्ट हो वर्ग हो तो वह राजशाही के प्रमुख समर्थक के रूप में रहे। इसका परिणाम यह निकला कि एक ऐसे अभिजन वर्ग का उदय हुआ जो कि परंपरागत आधार लिए हुए था तथा लोकतंत्र के आने के बाद भी उसके स्वरूप को बदलना कठिन हुआ। 1996 में माओवादी आंदोलन के शुरू होने पर पहली बार इस परंपरावादी अभिजन वर्ग को चुनौती मिली।

परिचय

राजनैतिक पद्धति के रूप में राजतंत्र विश्व के पर्दे से तेजी से गायब हो रहा है आज अधिकांश राजा को निश्चित ही अध्यक्षों के रूप में राजमुकुट पहनाया जाता है लेकिन वह सिर्फ नाम मात्र के ही शासक है वैसे राजा जो वस्तुतः है शासन करते हैं यह विश्व की अपेक्षा कम विकसित भागों में ही पाए जाते हैं ऐसे राजा मुट्ठी भर ही है भी उनका भविष्य प्रकाशमय नहीं है।

बहुत से अर्ध विकसित राष्ट्र के साथ यही बात है ऐसे अधिक सेवाओं में रहने वाले व्यक्तियों द्वारा अपनाया गया दृष्टिकोण जितना ही अधिक रूढ़िवादी होता है उतनी ही अधिक क्रांति की संभावना रहती है। क्योंकि समाज के विभिन्न वर्गो का समापन हो जाता है यदि उनकी परिवर्तन की मांगों को उनके द्वावारा निश्चित सीमा एवं शीघ्र ही मान नहीं लिया जाता, उच्च वर्ग समूह सेना के ऊपर सक्षम नियंत्रण रखता है और दूसरे संसाीगत साधन जैसे धर्म, जनसंख्या को अपेक्षाकृत एवं प्रभावकारी को स्वीकार करने की प्रेरणा शामिल है यह बिलकुल संभव है कि सेना यह आवश्यक समझे की राष्ट्रीय परिषद में उसे उचित हिस्सा नहीं मिल रहा है कोई परिवर्तन लागू कर सकती है पदाधिकारी कुछ और सापेक्ष राष्ट्रीय उत्पादन के हिस्सा से असंतुष्ट हो सकते है।

यह धारणा सर्व विदित रही है कि यह मान लिया जाए कि राजा आधुनिकरण के प्रयासों को आगे बढ़ाने के इच्छुक है जैसे आर्थिक विकास कार्यक्रम, भूमि सुधार और शैक्षणिक तथा अन्य कल्याणकारी कार्यकलाप। परंपरागत श्रेष्ठ जन की शक्ति को कम कर देगा जो राजतंत्र के लिए का प्राथमिक आधार का कार्य करता है जो कि आधुनिकरण के प्रयासों को विफल कर देने का षड्यंत्र कर सकते है और चरम सीमा पर पहुंच कर विद्रोह भी कर सकते हैं अतः राजा को राजनीतिक और प्रशासनिक उपकरणों को अपने नियंत्रण में रखना है।

साहित्यावलोकन

इस प्रकार हम देखते है कि विश्व के विकासशील देशों द्वारा आधुनिकरण के लिए किए गए प्रयत्न को कठिन समस्या का सामना करना पड़ा है जिसमें परंपरागत वर्ग के हितों और प्रगतिशील शक्तियों की तीव्र इच्छा के बीच संघर्ष की स्थिति रही है इस दिशा में नेपाल का प्रयत्न 1951 की क्रांति द्वारा राजतंत्र के पुनर्स्थापना के साथ एक नया सिद्धांत प्रस्तुत करता है।

राजनीतिक सिद्वांतों के इतिहास में प्रजातंत्र ही एकमात्र विशिष्ट सिद्धांत रहा है जो प्रबुद्ध वर्ग और विकास प्रगतिशील शक्तियों की आंरभ की तीव्र इच्छा के बीच संघर्ष की स्थिति रही है इस दिशा में नेपाल का प्रयत्न क्रांति द्वारा राजतंत्र की पुनर्स्थापना आज एक नया सिद्धांत प्रस्तुत करता है।

अध्ययन का उद्देश्य

राजनीतिक सिद्धांतों के इतिहास में प्रजातंत्र ही एकमात्र विशिष्ट सिद्धांत रहा है जो प्रबुद्ध वर्ग के लिए अब हार तथा कार्य रूप में परिणित किए जाने लायक सास्वत सिद्वांत है ग्रीक इतिहास हेरोडोटस ने इसे बहु संख्यकों का शासन, साम्यवादियों ने राज्य उपकरण के ऊपर सर्वहाराओं की विजय की एक कड़ी, कहकर पुकारा है प्रजातंत्र की परंपरागत धारणा को ग्रेट ब्रिटेन, स्वीटजरलैंड, फ्रांस संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे देशों में ठोस रूप प्रदान किया गया इन चारों प्रतिनिधियात्मक प्रजातांत्रिक सरकारों पर निगाह से हो पूर्णतया अवगत हैं। यह बात सिद्ध हो चुकी है कि संसदीय सरकार उदीयमान राष्ट्रों अनुरूप नहीं है इसका यहां वर्णन करना वांछनीय नहीं होगा।

अतः हम प्रजातंत्र संबंधी मुख्य विचारधारा की ओर लौटते हें इसमें कोई संदेह नहीं है की रूसों, जॉन लॉक, बेंथम, मिल आदि विचार को द्वारा प्रणीत प्रजातंत्रात्मक सरकार की धारणा में तकनीकी औद्योगिक व्यापारिक सामाजिक और सामाजिक विकास

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

की फलस्वरूप परिवर्तन हुआ है बहुत से तत्व विशेष रूप से आर्थिक और औद्योगिक ले कल्पना में नहीं आए है।

1950 के बाद नेपाल में आधुनिकरण की स्थिति

1951 में राजनैतिक परिवर्तन के उपरांत नवीन स्वार्थों, गुटों और नेपाल में बहुत से नए वर्गो का जन्म हुआ जिन्होंने अपना राजनीतिक वर्चस्व स्थापित करने का प्रयास किया। मुख्य रूप से आधुनिकीकरण की भूमिका अपनाने वाले देश नौकरशाही और सैनिक वर्ग, जो आधुनिकता की ओर दौड़ रहे थे, व्यापारी, व्यवसायी और भूमि के अधिकारों से संबंध नए स्वार्थी वर्ग एवं बुद्धि आदि लोग और पत्रकार, इनमें से अपने प्रभाव को बढ़ाने का प्रयास कर रहा था और प्रभाव के गुटों छात्र संगठनों सरकारी नौकरी तंत्र के प्रभावित होने वाले राजनीतिक दलों और सामाजिक तथा राजनीतिक संगठनों की सहायता देकर अपने हितों को आगे ले जाने की चेष्टा कर रहा था परंपरागत प्रभाव कारी गुटों में राजा द्वारा 15 दिसम्बर 1960 को सत्ता ग्रहण करने तक, धार्मिक और सैनिक संगठनों ने मुख्य भूमिका निभाई थी आधुनिकता की ओर उन्मुख कुलीन तंत्र ने, जो 1950 के राजनीतिक परिवर्तन के लिए तथा अंतर्भरती राजनीतिक परिवर्तन के संचालन के लिए प्रत्यक्ष रूप से उत्तरदायी था, आपने आपको नेपाल के मुख्य राजनीतिक दलों में सबसे ज्यादा परिपक्व तथा असंगठित सिद्ध किया राणा प्रशासन के दौरान, नेपाली सेना की अनेक टुकड़ी भारत आई प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान हैदाराबाद के विरूद्ध भारतीय सैनिक कार्यवाही के समय और 1948 में कश्मीर में हुए भारत–पाक युद्ध के समय भी कई टुकड़िया भारत आई, जिस उन्हें आधुनिक युद्ध कला को सीखने का मौका मिला ब्रिटिश और सेना में भी गोरखा सैनिकों ने अनेक भागों में सैनिक कार्यवाही की है।

1951 के राजनीतिक परिवर्तन के उपरांत, एक दशक तक भारतीय सैनिक मिशन ने सेना को प्रशिक्षण दिया परिणाम स्वरूप नेपाली सेना राजा साईं की काल की तुलना में कही अधिक प्रशिक्षित है नेपाल की राष्ट्रीय सेना जिसे पहले शाही सेना कहा जाता था जिसमें बड़े अफसर शाही परिवार एवं ऊंची जातियों से लिए जाते थे 15 दिसम्बर 1960 को राजा के सत्ता ग्रहण करने के उपरांत राजा महेन्द्र दीर्घकाल तक स्वयं रक्षा मंत्री बने रहे।

1980 के बाद भी यहां तक कि 1990 में लोकतंत्र के आगमन के बाद भी सेना की राजशाही के साथ वफादारी बनी रही इसके साथ ही सेना एक विशिष्ट वर्ग के रूप में कायम रही।

उदीयमान विशिष्ट वर्ग का दृष्टिकोण

नेपाल की नवीन शिक्षा पद्धति, विज्ञान और तकनीकी प्रशिक्षण के प्रति उन्मुख है 1971 में पंचायती संस्कृति के समाजीकरण के प्रमुख उद्देश्य को लेकर जारी की गई थी नवीन शिक्षा पद्धति में विश्वविद्यालय और उच्च शिक्षा प्रतिष्ठानों के लिए मानव संपदा की योजना और जरूरतों के आधार पर चयनात्मक प्रवेश का प्रावधान है और विशेष व्यवस्था में डिग्री और डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए अनिवार्य समाज सेवा का भी प्रावधान है! परंतु नवीन शिक्षा पद्धति को पंचायती संस्कृति के राष्ट्रीय प्रशिक्षण के लिए खुलेआम प्रयोग करना शिक्षा विरोधी सिद्ध हो सकता है और मानव मस्तिष्क और बुद्धि के विकास तथा स्वतंत्रता को अवरूद्ध कर सकता है।

जिसे के भावी परिणाम खतरनाक हो सकते हैं कुल मिलकार नेपाल में 1950 के बाद आधुनिकीकरण व राजनीतिक विकास की प्रक्रिया जटिल रही है 1950 मे नेपाल में राजनैतिक परिवर्तन तो हो गया लेकिन 1950 से 1990 तक सीधे तौर पर राजा की सर्वोच्चता बनी रही।

निष्कर्ष

राजा ने अपने तरीके से सीमित रूप में ही राजनैतिक परिवर्तन की आज्ञा दी साथ ही जो अभिजन वर्ग, चाहे वह नौकरशाही हो सेना शिक्षित विशिष्ट वर्ग, हो वे राजशाही के प्रमुख समर्थक के रूप में रहे, इसका परिणाम यह निकला कि नेपाल में एक ऐसी अभिजन वर्ग का उदय हुआ जो परंपरागत आधार लिए हुए था लोकतंत्र के आने के बाद भी उसके स्वरूप को बदलना कठिन हुआ! 1996 में माओवादी आंदोलन के शुरू होने पर इस परंपरावादी अभिजन वर्ग को चुनौति मिली।

संदर्भ

1. डब्लू पाई. लूसियान , एस्पेक्ट्स ऑफ़ पॉलीटिकल डेवलपमेंट, बोस्टन, लिटिन ब्राउन एण्ड कम्पनी, 1966, पृष्ठ सं. 31 –45.
2. उपरोक्त सं. 29.
3. डेविड आप्टर, द पॉलिटिकल ऑफ मॉडर्नाइजेशन, शिकागो , यूनिवर्सिटी प्रेस, 1965, पृष्ठ सं. 113–116.
4. उपरोक्त प्रश्न सं. 99
5. मार्गरेट फिशर एवं लियो इ–रोज, पॉलिटिक्स ऑफ नेपाल, 1970, एटाका यूनिवर्सिटी प्रेस करनैल
6. उपरोक्त पृ. 2
7. पिनाक एंड स्मिथ, पॉलिटिकल साइंसः एन इंट्रोडक्शन, न्यूयॉर्क, मेंकमिलन, 1964, पृष्ठ सं. 239– 244.
8. उपरोक्त सं. , 87 –88
9. अनिरुद्ध गुप्ता, पॉलिटिक्स इन नेपाल, दिल्ली 1964, पृष्ठ सं. 91 –94.
10. उपरोक्त पृ. सं 77.

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

11. उपरोक्त प्र. 82
12. शिव बहादुर सिंह, नेपाल शासन एवं राजनीति, गंगा सदन अब एंड ग्रैंड संस, 2000, वाराणसी पृष्ठ् संख्या 15 –22
13. उपरोक्त पृ. संख्या 8.
14. उपरोक्त पृ. संख्या 11.
15. भोला चटर्जी पैलेस, पीपुल्स एंड पॉलिटिक्स, नई दिल्ली, 1980 , पृष्ठ् सं. 34 –38.
16. उपरोक्त पृ. संख्या 27.

© RRIJM 2015, All Rights Reserved